SET – 3

Series : ONS/1

कोड नं.
Code No. 29/1/3

रोल नं.
Roll No. | | | | | | | |

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **7** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **14** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जायेगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी (ऐच्छिक)
HINDI (Elective)

निर्धारित समय : 3 घंटे | *अधिकतम अंक : 100*

Time allowed : 3 hours | *Maximum marks : 100*

सामान्य निर्देश :

- *इस प्रश्न-पत्र में **14** प्रश्न हैं ।*
- ***सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।*
- *विद्यार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर लिखें ।*

खंड – 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **15**

यह सत्य है कि दोनों पक्षों के वीर इस युद्ध को धर्मयुद्ध मानकर लड़ रहे थे, किंतु धर्म पर दोनों में से कोई भी अडिग नहीं रह सका । 'लक्ष्य प्राप्त हो या न हो, किंतु हम कुमार्ग पर पाँव नहीं रखेंगे' – इस निष्ठा की अवहेलना दोनों ओर से हुई और दोनों पक्षों के सामने साध्य प्रमुख और साधन गौण हो गया । अभिमन्यु की हत्या पाप से की गई तो भीष्म, द्रोण, भूरिश्रवा और स्वयं दुर्योधन का वध भी धर्म सम्मत नहीं कहा जा सकता । जिस युद्ध में भीष्म, द्रोण और श्रीकृष्ण विद्यमान हों, उस युद्ध में भी धर्म का पालन नहीं हो सके, इससे तो यही निष्कर्ष निकलता है कि युद्ध कभी भी धर्म के पथ पर रहकर लड़ा नहीं जा सकता । हिंसा का आदि भी अधर्म है, मध्य भी अधर्म है और अंत भी अधर्म है । जिसकी आँखों पर लोभ की पट्टी नहीं बँधी है, जो क्रोध और आवेश अथवा स्वार्थ में अपने कर्त्तव्य को भूल नहीं गया है, जिसकी आँख साधना की अनिवार्यता से हट कर साध्य पर ही केंद्रित नहीं हो गई है, वह युद्ध जैसे मलिन कर्म में कभी भी प्रवृत्त नहीं होगा । युद्ध में प्रवृत्त होना ही इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य अपने रागों का दास बन गया है, फिर जो रागों की दासता करता है, वह उनका नियंत्रण कैसे करेगा ।

अगर यह कहिए कि विजय के लिए युद्ध अवश्यंभावी है तो विजय को मैं कोई बड़ा ध्येय नहीं मानता । जिस ध्येय की प्राप्ति धर्म के मार्ग से नहीं की जा सकती, वह या तो बड़ा ध्येय नहीं है अथवा अगर है तो फिर उसे पाप के मार्ग से पाने का प्रयास व्यर्थ है । संग्राम के कोलाहल में चाहे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ा हो, किन्तु आज मैं अपनी आत्मा की इस पुकार को स्पष्ट सुन रहा हूँ कि युधिष्ठिर ! तुम जो चाहते थे वह वस्तु तुम्हें नहीं मिली ।

संग्राम तो जैसे-तैसे समाप्त हो गया किंतु उससे देश भर में हिंसा की जो मानसिकता फैली, उसका क्या होगा ? क्या लोग हिंसा के खेल को दुहराते जाएँगे अथवा यह विचार कर शांति से काम लेंगे कि शत्रुओं का भी मस्तक उतारना बर्बरता और जंगलीपन का काम है ।

(क) कौरवों और पांडवों ने महाभारत युद्ध को धर्मयुद्ध क्यों माना ? दोनों पक्षों में किस निष्ठा की बात कही गई थी ? **2**

(ख) मलिन कर्म से क्या आशय है ? युद्ध को मलिन कर्म क्यों माना गया है ? **2**

(ग) युद्ध में प्रवृत्ति रखने वाले लोगों की क्या पहचान बताई गई है ? **2**

(घ) हिंसा का आदि, मध्य और अंत अधर्म क्यों माना गया है ? **2**

(ङ) साध्य और साधन से आप क्या समझते हैं ? कैसे कहा जा सकता है कि महाभारत युद्ध में साध्य प्रमुख और साधन गौण हो गए ? **2**

(च) आपके विचार में गद्यांश से विश्वशांति के लिए क्या संदेश उभरता है ? स्पष्ट कीजिए । **2**

(छ) "युद्ध कभी भी धर्म के पथ पर रहकर लड़ा नहीं जा सकता है ।" – पक्ष या विपक्ष में दो तर्क प्रस्तुत कीजिए । **2**

(ज) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए । **1**

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

खोल सीना, बाँधकर मुट्ठी कड़ी
मैं खड़ा ललकारता हूँ ।
ओ नियति !
तू सुन रही है ?
मैं खड़ा तुझको स्वयं ललकारता हूँ
आज खोले वक्ष, उन्नत शीश, रक्तिम नेत्र
तुझको दे रहा हूँ, ले, चुनौती
गगनभेदी घोष में
दृढ़ बाहुदंडों को उठाए ।
क्योंकि मैंने आज पाया है स्वयं का ज्ञान
क्योंकि मैं पहचान पाया हूँ कि मैं हूँ मुक्त, बंधनहीन
और तू है मात्र भ्रम, मन-जात, मिथ्या वंचना,
इसलिए इस ज्ञान के आलोक के पल में
मिल गया है आज मुझको सत्य का आभास
और ओ मेरी नियति !
मैं छोड़कर पूजा
(क्योंकि पूजा है पराजय का विनत स्वीकार –)
बाँधकर मुट्ठी तुझे ललकारता हूँ
सुन रही है तू ?
मैं खड़ा तुझको यहाँ ललकारता हूँ ।

(क) कवि किसे ललकार रहा है ? और क्यों ? **1**

(ख) कवि की चुनौती देने वाली मुद्रा पर टिप्पणी कीजिए । **1**

(ग) कवि ने नियति को भ्रम और मिथ्या वंचना क्यों कहा है ? **1**

(घ) कवि ने अपनी पहचान क्या बताई है ? **1**

(ङ) भाव स्पष्ट कीजिए – "पूजा है पराजय का विनत स्वीकार" । **1**

खंड – 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए : **10**

(क) प्रगति पथ पर अग्रसर भारत

(ख) खेलों का जीवन में महत्त्व

(ग) राष्ट्र निर्माण में युवावर्ग का योगदान

(घ) राजनीति और भ्रष्टाचार

4. विद्यालय स्तर पर सैनिक शिक्षा को अनिवार्य किए जाने के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए अपने राज्य के शिक्षा सचिव को पत्र लिखकर + 2 स्तर के सभी विद्यार्थियों के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य करने का अनुरोध कीजिए । **5**

अथवा

आधुनिक युग में विज्ञान शिक्षा का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए किसी प्रतिष्ठित पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और विज्ञान शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए दो सुझाव भी दीजिए ।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में लिखिए : **$1 \times 5 = 5$**

(क) संचार किसे कहते हैं ?

(ख) चौथा खंभा किसे कहा जाता है ? क्यों ?

(ग) समाचार के किन्हीं दो तत्त्वों का उल्लेख कीजिए ।

(घ) पत्रकार की बैसाखियों से आप क्या समझते हैं ?

(ङ) खोजपरक पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं ?

6. “प्रतिस्पर्धा के कारण विद्यार्थियों में बढ़ता मानसिक तनाव” विषय पर एक आलेख लिखिए । **5**

अथवा

“बस्ती-बस्ती में रामलीला की धूम” विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए ।

खंड – ‘ग’

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **8**

जननी निरखति बान धनुहियाँ ।
बार-बार उर नैननि लावति प्रभुजू की ललित पनहियाँ ।।
कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय बचन सवारे
“उठहु तात ! बलि मातु बदन पर, अनुज सखा सब द्वारे ।।”
कबहुँ कहति यों, “बड़ी बार भइ जाहु भूप पहँ, भैया ।
बंधु बोलि जेंइय जो भावै गई निछावरि मैया ।”

अथवा

जो है वह खड़ा है
बिना किसी स्तंभ के
जो नहीं है उसे थामे हैं
राख और रोशनी के ऊँचे-ऊँचे स्तंभ
आग के स्तंभ
धुएँ के
खुशबू के
आदमी के उठे हुए हाथों के स्तंभ
किसी अलक्षित सूर्य को
देता हुआ अर्घ्य
शताब्दियों से इसी तरह
गंगा के जल में
अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर
अपनी दूसरी टाँग से
बिलकुल बेखबर !

8. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **3 + 3 = 6**

(क) "दुख ही जीवन की कथा रही" – पंक्ति में निहित 'निराला' की वेदना पर प्रकाश डालिए ।

(ख) 'यह दीप, अकेला, स्नेह-भरा' के आधार पर बताइए कि व्यष्टि का समष्टि में विलय क्यों और कैसे संभव है ?

(ग) घनानंद के सवैये के आधर पर 'हियो हितपत्र' की विशेषताएँ लिखिए और बताइए कि उसके साथ प्रियतमा ने क्या व्यवहार किया ?

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** काव्यांशों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए : **3 + 3 = 6**

(क) ऊँचे तरुवर से गिरे

बड़े-बड़े पियराए पत्ते

कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो –

खिली हुई हवा आई, फिरकी-सी आई, चली गई ।

(ख) हेम कुंभ ले उषा सवेरे – भरती ढुलकाती सुख मेरे ।

मदिर ऊँघते रहते जब – जगकर रजनी भर तारा ।।

(ग) यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाऊ ।

मकु तेहि मारग होइ परौं कंत धरैं जहँ पाउ ।।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **6**

साहित्य का पांचजन्य समरभूमि में उदासीनता का राग नहीं सुनाता । वह मनुष्य को भाग्य के आसरे बैठने और पिंजड़े में पंख फड़फडाने की प्रेरणा नहीं देता । इस तरह की प्रेरणा देने वालों के वह पंख कतर देता है । वह कायरों और पराभव-प्रेमियों को ललकारता हुआ एक बार उन्हें भी समरभूमि में उतरने के लिए बुलावा देता है ।

अथवा

स्नान से ज्यादा समय ध्यान ले रहा था । दूर जलधारा के बीच एक आदमी सूर्य की ओर उन्मुख हाथ जोड़े खड़ा था । उसके चेहरे पर इतना विभोर, विनीत भाव था मानो उसने अपना सारा अहम त्याग दिया है । उसके अन्दर 'स्व' से जनित कोई कुंठा शेष नहीं है, वह शुद्ध रूप से चेतनस्वरूप, आत्माराम और निर्मलानंद है ।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **4 + 4 = 8**

(क) "दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं" – कथन का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि कुटज कैसे इन दोनों से अप्रभावित रहता है ।

(ख) हरगोबिन द्वारा बड़ी बहुरिया का संवाद न सुना पाने के पीछे निहित कारणों पर प्रकाश डालिए ।

(ग) "आधुनिक औद्योगीकरण की आँधी में सिर्फ मनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश, संस्कृति और आवास-स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं ।" 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ के आधार पर उपर्युक्त कथन की समीक्षा कीजिए ।

12. असगर वजाहत **अथवा** ब्रजमोहन व्यास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए । **6**

अथवा

विष्णु खरे **अथवा** केशवदास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

13. 'सूरदास प्रतिशोध की अपेक्षा क्षमा में विश्वास रखता था ।' – इस कथन के आलोक में 'सूरदास' कहानी में निहित जीवन-मूल्यों की समीक्षा कीजिए । **5**

अथवा

"भूपसिंह के जीवन-मूल्य हमारे लिए भी प्रेरणा-स्रोत हैं" – 'आरोहण' पाठ के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

14. (क) सूरदास के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । **5**

(ख) 'आरोहण' कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए कि पहाड़ों का जीवन अत्यन्त कठिन है । **5**